समकालीन विश्व राजनीति

Page No.
Date

पाठ - 1 विश्व राजनीति में शीतयुद्ध का दौर

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न1 शीतयुद्ध के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?

(क) यह संयुक्त राज्य अमरीका, सोवियत संघ और उनके साथी देशों के बीच की एक प्रतिस्पर्धा थी।

(ख) यह महाशक्तियों के बीच विचारधाराओं को लेकर एक युद्ध था।

(ग) शीतयुद्ध ने हथियारों की होड़ शुरू की।

(घ) अमरीका और सोवियत संघ सीधे युद्ध में शामिल थे।

उत्तर → अमरीका और सोवियत संघ सीधे युद्ध में शामिल थे।

प्रश्न2 निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गुटनिरपेक्ष आंदोलन के उद्देश्यों पर प्रकाश नहीं डालता है?

क उपनिवेशवाद से मुक्त हुए देशों की स्वतंत्र नीति अपनाने में समर्थ बनाना

ख किसी भी सैन्य संगठन में शामिल होने से इंकार करना

ग वैश्विक मामलों में तटस्थता की नीति अपनाना

घ वैश्विक आर्थिक असमानता की समाप्ति पर ध्यान केंद्रित करना

उत्तर ग वैश्विक मामलों में तटस्थता की नीति अपनाना

प्रश्न3 प्रत्येक कथन पर सही या गलत का चिह्न लगाएँ।

क गठबंधन के सदस्य देशों को अपने भू-क्षेत्र में महाशक्तियों के सैन्य अड्डे के लिए स्थान देना जरूरी था (✓)

Page No.
Date

ख सदस्य देशों को विचारधारा और रणनीति दोनों में महाशक्तियों का समर्थन करना था (✓)

ग जब कोई शत्रु किसी एक सदस्य देश पर आक्रमण करता था तो इसे सभी सदस्य देशों पर आक्रमण समझा जाता था (✓)

घ महाशक्तियाँ सभी सदस्य देशों को अपने परमाणु हथियार विकसित करने में मदद करती थी (X)

प्रश्न4 नीचे कुछ देशों की एक सूची दी गई है। प्रत्येक के सामने लिखिए कि वह शीतयुद्ध के दौरान किस गुट से जुड़ा था।

उत्तर
क पोलैंड → सोवियत संघ गुट (पूर्वी गठबंधन)
ख फ्रांस → अमरीकी गुट (पश्चिमी गठबंधन)
ग जापान → अमरीकी गुट (पश्चिमी गठबंधन)
घ नाइजीरिया → गुटनिरपेक्ष देश
ड. उत्तरी कोरिया → सोवियत संघ गुट (पूर्वी गठबंधन)
च. श्रीलंका → गुटनिरपेक्ष देश

प्रश्न5 शीतयुद्ध हथियारों की होड़ और हथियारों पर नियंत्रण – ये दोनों ही प्रक्रियाएँ पैदा हुई। इन दोनों प्रक्रियाओं के क्या कारण थे?

उत्तर- शीतयुद्ध हथियारों की होड़ का मुख्य कारण दोनों महाशक्तियाँ अपने को दूसरे से अधिक शक्तिशाली बनाना था ताकि वे अपने प्रभाव में वृद्धि कर सकें। दोनों देश एक दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखते थे क्योंकि उनको इस बात की जानकारी नहीं थी कि दूसरा देश कितना

शक्तिशाली थे और शीतयुद्ध के दौरान हथियारों की होड़ जारी रही दोनों देशों ने अधिक से अधिक हथियार एकत्रित किए। हथियारों की अधिकता को युद्ध से बचे रहने के लिए आवश्यक माना गया।

हथियारों पर नियंत्रण की प्रतिक्रिया का मुख्य कारण यह था कि दोनों देश हथियारों की होड़ के बावजूद यह महसूस करते थे कि निम्न परिस्थितियों में दोनों देशों में युद्ध हो सकता है

i दोनों पक्षों में से किसी के द्वारा दूसरे के हथियारों की संख्या का गलत अनुमान लगाना।

ii एक - दूसरे के उद्देश्यों का गलत अनुमान लगाना

iii परमाणु दुर्घटना या गलती से परमाणु हथियारों का प्रयोग करना।

iv जान - बूझकर सैनिक प्रशासन द्वारा परमाणु हथियारों का प्रयोग करना।

v शत्रु द्वारा परमाणु हथियारों के प्रयोग का षड्यंत्र करना या दुर्घटना होना।

उपरोक्त परिस्थितियों के कारण दोनों महाशक्तियों को हथियारों के नियंत्रण करने की आवश्यकता महसूस हुई अतः उन्होंने हथियारों को सीमित करने के लिए आपस में सहयोग करने का निर्णय लिया। इसके परिणामस्वरूप तीन संधियाँ की गई :-

- परमाणु परिक्षण प्रतिबंध संधि,
- परमाणु अप्रसार संधि और,
- परमाणु प्रक्षेपास्त्र परिसीमन संधि की इसके पश्चात् महाशक्तियों ने अस्त्र - परिसीमन के लिए अनेक संधियाँ की।